UP Board Class 8 History Notes Chapter 3 भारत में कंपनी राज्य का विस्तार

टीपू सुल्तान :- शेर-ए-मैसूर हैदर अली (शासन काल 1782 से 1799) और उनके विख्यात पुत्र टीपू सुल्तान (शासन काल 1782 से 1799) जैसे शक्तिशाली शासकों के नेतृत्व में मैसूर काफ़ी ताकतवर हो चुका था। मालाबार तट पर होने वाला व्यापर मैसूर रियासत के नियंत्रण में था जहाँ से कंपनी काली मिर्च और इलायची खरीदती थी। 1785 में टीपू सुल्तान ने अपनी रियासत में पड़ने वाले बंदरगाहों से चंदन की लकड़ी , काली मिर्च और इलायची का निर्यात रोक दिया। टीपू सुल्तान ने भारत में रहने वाले फ़्रांसिसी व्यापारियों से घनिष्ठ संबंध विकसित किए और उनकी मदद से अपनी सेना का आधुनिकीकरण किया।

सुल्तान के इन कदमों से अंग्रेज़ आग-बबूला हो गए फलस्वरूप मैसूर के साथ अंग्रेज़ो की चार बार जंग हुई। (1767-69 , 1780-84 , 1790-92 , और 1799) श्रीरंगपट्म की आखिरी जंग में कंपनी को सफलता मिली।अपनी राजधानी की रक्षा करते हुए टीपू सुल्तान मारे गए और मैसूर का राजकाज पुराने वोडियर राजवंश के हाथों में सौंप दिया गया।

मराठों से लड़ाई :- 1761 में पानीपत की तीसरी लड़ाई में हार के बाद दिल्ली से देश का शासन चलाने का मराठों का सपना चूर-चूर हो गया। उन्हें कई राज्यों में बाँट दिया गया। की राज्यों की बागडोर सिंधिया , होलकर , गायकवाड और भोंसले जैसे अलग-अलग राजवंशो के हाथो में थी। ये सारे सरदार एक पेशवा (सर्वोच्च मंत्री) के अंतर्गत एक कन्फ़ेडरेसी (रजमण्डल) के सदस्य थे। पेशवा इस राज्यमण्डल का सैनिक और प्रशासकीय प्रमुख होता था और पुणे में रहता था। महाद्जी सिंधिया और नाना फड़नीस अठारहवीं सदी के आखिर के दो प्रसिद्ध मराठा योद्धा और राजनीतिज्ञ थे।

पहला युद्ध 1782 में सालबाई संधि के साथ खत्म हुआ। दूसरा अंग्रेज-मराठा 1803-05 कई मोर्चो पर लड़ा गया। नतीजा यह हुआ की उड़ीसा , आगरा , दिल्ली कई भूभाग अंग्रेजों के कब्ज़े में आ गए। तीसरा यद्ध 1817-19 अंग्रेजों ने मराठों की ताकत को पूरी तरह से कुचल दिया।

क्षेत्रीय विस्तार की आक्रामक नीति :- लॉर्ड हेस्टिंग्स (1813-1823 तक गवर्नर जनरल) के नेतृत्व में " सर्वोच्च " की एक नई नीति शुरू की गयी। कंपनी का दावा था की उसकी सत्ता सर्वोच्च है इसलिए वह भारतीय राज्यों से ऊपर है। 1838-42 के बीच अफगानिस्तान के साथ लंबी लड़ाई लड़ी और अप्रत्यक्ष कंपनी शासन स्थापित कर लिया। 1843 में सिंध भी कब्जे में आ गया। इसके बाद पंजाब की बारी थी। यहाँ महराजा रणजीत सिंह ने कंपनी की दाल नहीं गलने दी। 1839 में उनकी मृत्यु के बाद इस रियासत के साथ दो लंबी लड़ाइयाँ हुई और आखिरकार 1849 में अंग्रेजो ने पंजाब का भी अधिग्रहण कर लिया।

विलय निति :- लॉर्ड डलहौजी ने एक नई नीति अपनाई जिसे विलय की नीति का नाम दिया गया। यह सिद्धांत इस तर्क पर आधारित था की अगर किसी शासक की मृत्यु हो जाती है और उसका कोई पुरुष वारिस नहीं हैं तो उनकी रियासत हड़प कर ली जाएगी यानी कंपनी के भूभाग का हिस्सा बन जाएगी। इस सिंद्धात के आधार पे एक के बाद एक की रियासतें – सतारा (1848) , संबलपुर (1850) , उदयपुर (1852) , नागपुर (1853) , और झाँसी (1854) अंग्रेजों के हाथ में चली गयी।